वर्ष-१२ अंक-१०
२७ जून, २०१६

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल 32/2015-17
एक प्रति- २०-०० रु.

ओ३म्

वैदिक रवि

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

ऋग्वेद

यजुर्वेद

सामवेद

अथर्ववेद

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है ..

एक दृष्टि में आर्य समाज

- आर्य समाज की मान्यता का आधार सत्य सनातन वैदिक धर्म है।
- सनातन वह है जो सदा से था, सदा रहेगा। सत्य सनातन धर्म का आधार वेद है।
- वेद ज्ञान का मूल परमात्मा है।
- यही सृष्टि के प्रारंभ का सबसे पहला ज्ञान, पहली संस्कृति और समस्त सत्य विद्याओं से पूर्ण है।
- वेद ज्ञान किसी जाति, वर्ण, सम्प्रदाय या किसी महापुरुष के ज्ञान के अनुसार नहीं है और न ही किसी समय व स्थान की सीमा में बन्धा है।
- परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद समस्त प्राणियों के लिए और सदा के लिए हैं।
- इसे पढ़ना-पढ़ाना श्रेष्ठ (आर्य) जनों का परम धर्म है।
- ईश्वर को सभी मानते हैं इसलिए विश्व शान्ति इसी ईश्वरीय ज्ञान वेद से संभव है।
- आर्य समाज-अविद्या, कुरीतियों, पाखण्ड व जाति प्रथा जैसी सामाजिक बुराईयों को दूर करने वाला तथा सत्य ज्ञान व सनातन संस्कृति का प्रचारक है।

ओ३म्
वैदिक-रवि
मासिक

वर्ष-१२ अंक-१०

२७ जून २०१६
(सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के निर्णयानुसार)
सृष्टि सम्वत् १, ९६, ०८, ५३, ११६
विक्रम संवत् २०७३
दयानन्दाब्द १९१

सलाहकार मण्डल
राजेन्द्र व्यास
पं.रामलाल शास्त्री 'विद्या भास्कर'
डॉ. रामलाल प्रजापति
वरिष्ठ पत्रकार

प्रधान सम्पादक
श्री इन्द्रप्रकाश गांधी
कार्या.फोन: ०७५५ ४२२०५४९

सम्पादक
प्रकाश आर्य
फोन: ०७३२४२२६५६६

सह-सपादक
मुकेश कुमार यादव
फोन: ९८२६१८३०९५

सदस्यता
एक प्रति- २०-०० रू.
वार्षिक-२००-०० रू.
आजीवन-१००० ०० रू.

विज्ञापन की दरें
आवरण पृष्ठ २ एवं ३ ५०० रू.
पूर्ण पृष्ठ (अंदर) -४००रू
आधा पृष्ठ (अंदर का) २५० रू.
चौथाई पृष्ठ १५० रु

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	4
2.	समृद्धि का मूल मन्त्र - एकता और पुरुषार्थ	6
3.	यज्ञ	8
4.	शपथ	10
5.	क्षमा	11
6.	कभी जीवन की बेलेन्स शीट भी बनाओ	13
7.	महात्मा आनन्द स्वामी	16
8.	सिंहस्थ में अभूतपूर्व वेद प्रचार	18
9.	आर्य वीर दल का प्रांतीय शिविर सम्पन्न	25
10.	ऐतिहासिक वेद प्रचार आयोजन	26

जुलाई माह के पर्व त्यौहार एवं जयंती

1	डॉ. एन.सी.ए. दिवस
6	पं.श्यामाप्रसाद गुप्त जी जयंती
11	विश्व जनसंख्या दिवस
23	चन्द्रशेखर आजाद, बाल गंगाधर तिलक जयंती
27	डॉ. ए.पी.जी. अब्दुल कलाम पुण्य तिथि (मिसाइल मैन)
31	मुंशी प्रेमचंद जयंती
15	चतुर्मास प्रारंभ
19	गुरू पूर्णिमा

सम्पादकीय :

कैनारा घटना फिर एक घातक षड़यन्त्र का संकेत

शासन और प्रशासन का मुख्य कार्य समाज के मध्य व्यवस्था और सुरक्षा कायम रखना है। इस विचार में जब स्वार्थ बीच में आ जाता है, फिर वहां कर्तव्य गौंण हो जाते हैं और स्वार्थ सर्वोपरी होता है। भारतवर्ष में ऐसा ही कुछ देखने को मिल रहा है। जहां सत्य का समर्थन करने के पूर्व यह देखा जाता है कि सत्य किस पार्टी के द्वारा अथवा किस व्यक्ति के द्वारा कहा जा रहा है। यदि सत्य उस व्यक्ति के द्वारा जो विरोधी है तो उसका सत्य भी हमें असत्य सिद्ध कर देना हमारा जन्म सिद्ध अधिकार हो गया है।

वर्तमान राजनीति की स्थिति जन कल्याण की भावना से उपर उठकर गुट और कुर्सी तक सीमित रह गई है। प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी ने स्वच्छ भारत का एक सन्देश दिया, यह स्वच्छता इस देश के रहने वाले हर राजनैतिक दल, साम्प्रदायिक व जातियता में बंटे हुए व्यक्तियों के लिए सबके लिए मानव मात्र के लिए हितकारी है। किन्तु कितने प्रतिशत लोगों ने प्रधानमन्त्री मोदीजी की इस बात को सराहा। सराहना तो ठीक है, इसके विपरीत उसमें गलतियां ढूंढने की पूरी शक्ति से प्रयास करते रहे अर्थात किसी अच्छी बात का भी यह देश सर्वानुमति से समर्थन नहीं कर सकता, इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या हो सकता है ?

कैनारा की घटना ने पुनः इस देश के विशेषकर उन लोगों को जो इस राष्ट्र की चिन्ता है, इसके हितैषी हैं उन्हें तथा जो बहुसंख्यक वर्ग की श्रेणी में आते हैं, सोचने के लिए मजबूर कर दिया है। समाज और भारत की अस्मिता पर एक प्रश्न चिन्ह उनके समक्ष प्रस्तुत हो गया है। इसका एक प्रमुख कारण यह है कि पूरा देश समाज विरोधी इस घटना का एक स्वर में विरोध नहीं कर रहा है। इससे बड़ी विडम्बना है कि कुछ न केवल विरोध करते हैं अपितु वोटों की राजनीति और अपनी लोकप्रियता उन लोगों के मध्य बढ़ाने के लिए उनके पापों पर भी आवरण डालते हुए उन्हें बेगुनाह साबित करने के लिए बढ़ चढकर बयान दे रहे हैं।

आज हमारे समक्ष कश्मीर, केरल और पूर्वांचल के अनेक प्रान्तों की समस्याएं हैं जहां बाहुबली और हिंसा को शस्त्र बनाकर कुछ लोग अपना प्रभुत्व बढ़ाने में लगे हैं। इस देश से पृथक अपना अस्तित्व बनाने का प्रयास कर रहे हैं। कुछ दिनों पूर्व हैदराबाद के एक अल्प संख्यक नेता ने अपनी कौम के बहु संख्यक होने के कारण सनातन धर्म की कुछ बातों पर प्रतिबन्ध लगाने की बात कर दी थी। भारत से पाकिस्तान का विभाजन इसी प्रकार की साम्प्रदायिक भावनाओं का परिणाम था, कश्मीर से कश्मीरी पण्डितों और सनातनधर्मियों का पलायन भी सम्प्रदायिक भावनाओं का द्योतक हैं। इस प्रकार इस घटना को अनदेखा करना या साधारण रूप में इसे लेना एक नये खतरे को निमन्त्रण देना है।

यह विचारधारा तेजी से बढ़ रही है, किन्तु इस ज्वलन्त समस्या पर विशेष ध्यान देश के महापुरूषों का नहीं जा रहा है। वे अपने कद को बढ़ाने के लिए देश का कद छोटा करने में लगे हैं। असामाजिक ताकतों का साथ देकर उनके मध्य अपनी छवि को बढ़ाने में लगे हैं।

आज आवश्यकता है पूरे राष्ट्र को इस कलंकित और दर्दनाक घटना के सामने पूरी शक्ति से खड़े होकर विरोध करने की। साथ ही उन राजनेताओं का जिनका धर्म केवल राजनीति है, उनको बहिष्कृत कर राष्ट्र और सामाजिक धर्म का एक गरिमामयी उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए।

भारत वर्ष बहुत बड़ा देश है इसकी तुलना एक शरीर से की जानी चाहिए, शरीर के किसी भी अंग में कोई तकलीफ होती है तो पूरा शरीर उससे व्यथित हो जाता है, क्योंकि शरीर का पूरे हिस्से से संबंध रहता है। यह देश भी ऐसा ही है, यदि ऐसा देश के निवासी भी सोच लें जो कि हर नागरिक का यह नैतिक कर्तव्य है कि इस देश में कहीं पर भी कुछ हो किन्तु उसका समर्थन या विरोध पूरा देशवासी करेगें। क्योंकि देश का कोई भी हिस्सा हो वह शरीर के हिस्से के समान इस देश का ही अंग है, जिसकी पीड़ा पूरे देश को होनी चाहिए। आज यदि इस पर समस्त देशवासी ध्यान नहीं देते हैं तो यह रोग बढ़ता जाएगा और जो आज दूर से तमाशा देख रहे हैं कभी न कभी उन्हें भी इस प्रकार के दुष्परिणामों को भोगना पडेगा।

इसलिए समाज के उन सभी अग्रणी महानुभाव को जातिवाद, समाजवाद और दलगत राजनीति से उठकर राष्ट्र की इस समस्या का निदान निःस्वार्थ करना चाहिए। यह नहीं भूलना चाहिए कि यदि राष्ट्र सुरक्षित है तो हम सुरक्षित हैं।

प्रिय पाठकवृन्द,

वैदिक रवि आपका अपना, अपनी सभा का पत्र है। प्रयास किया जा रहा है कि यह अत्यन्त रोचक, ज्ञानवर्धक पत्रिका बनें। हमारी अपनी बात उन लोगों तक भी पहुंचना चाहिए जो वैदिक विचारों से दूर हैं। इसी भावना से पत्रिका सम्पादन का प्रयत्न सरलतम किया जा रहा है जिसे प्रत्येक व्यक्ति पढ़े और इसे पसन्द करे। इसके अधिक से अधिक पाठक हो सकें, इसलिए वैदिक रवि के ग्राहक संख्या बढ़ाने में सहयोगी बनें, अपने परिवार, मित्रों, सगे संबंधियों को इसके ग्राहक बनाइए। साथ ही अपनी वार्षिक सहयोग राशि भी प्रेषित करें।

विशेष–बार–बार निवेदन किया जा रहा है कि पत्रिका का और अच्छा स्तर बनें। इस हेतु अपने या स्थापित विद्वानों के लेख, विचार, कविता, समाचार महू के पते पर प्रेषित करें। कृपया इस ओर ध्यान देवें।

समृद्धि का मूल मन्त्र – एकता और पुरूषार्थ

एक व्यक्ति था बहुत निर्धन। परिवार बहुत बड़ा था। खाने को कुछ नहीं। दशा बहुत खराब हुई तो परिवार को लेकर ग्राम से चल पड़ा कि कहीं दूसरे नगर में जाएं। परिश्रम करके पेट पालेगें। ग्राम से चले। चलते गये। रात्रि हुई तो एक वृक्ष के नीचे उन्होंने डेरा डाल दिया। पिता ने अपने बेटे से कहा – बेटा ! जाओ, पास के वन से कुछ लकड़ियां ले आओ, ताकि आग तो जलाएं।

बेटा चलने लगा तो छोटा भाई बोला – इन्हें मत भेजो, मैं जाकर लाता हूं।

उससे छोटे ने कहा – नहीं, पिताजी, मैं लाता हूं।

पिता ने कहा – अच्छा बेटो, सभी कार्य करो। एक व्यक्ति लकड़ी ले आए, दूसरा पानी, तीसरा पत्थर लाकर चूल्हा बना ले।

सब मिलकर कार्य करने लगे। थोड़ी देर में चूल्हा बन गया। लकड़ियां आ गई, आग जली, पानी भी आ गया।

उस वृक्ष पर एक पक्षी रहता था। उसने जब यह सब कुछ देखा, तो हंसकर कहा – अरे, भोले लोगों, सब कुछ तुम ले आए, परन्तु खाने को कुछ है नहीं। पकाओगे क्या ? खाओगे क्या ?

समझने के लिए यह कथा बनाई गई है, वैसे पक्षी बोलते तो हैं नहीं। बड़े लड़के ने ऊपर देखा। पक्षी को देखते हुए कहा – तुझे खाएंगे हम। ठहर अभी तुझे पकड़ता हूं।

पक्षी ने भयभीत होकर कहा – नहीं भाई, ऐसा न करो। मुझे न खाओ। मैं तुम्हें एक स्थान दिखाता हूं, जहां तुम्हें सब कुछ मिल जायेगा।

उन लोगों ने पक्षी के साथ थोड़ी दूर जाकर स्थान देखा। पक्षी ने कहा – इस स्थान को खोदो।

उन्होंने खोदा तो देखा, नीचे एक बहुत बड़ा कोष है, सोना, चांदी, हीरे, जवाहरात, सभी कुछ इसमें है। उस दौलत को उन्होंने निकाल लियाा। अब परिश्रम की आवश्यकता नहीं थी, इसलिए दूसरे दिन ग्राम में वापस आ गए। धन बहुत था। आनन्द से रहने लगे। उनके पड़ोसी ने यह दशा देखी तो पूछा – अरे ! तुम यह एक ही रात में इतने सम्पत्तिशाली कैसे हो गए ?

इन लोगों ने पड़ोसी को अपनी सारी कथा सुना दी। उस वृक्ष की बात भी बता दी, पक्षी की बात भी। पड़ोसी ने सोचा – यह तो बहुत अच्छा उपाय है। वह भी अपने सारे परिवार को लेकर ग्राम से चल पड़ा। रात्रि में उस वृक्ष के समीप पहुंचा। वहां डेरा डाल दिया, तो उसने अपने बड़े पुत्र से कहा – पुत्र, जाओ थोड़ी लकड़ियां ले आओ।

पुत्र ने क्रोध से कहा – छोटे को क्यों नहीं कहते ? उसकी क्या टांगें टूट गई हैं ?

पिता ने छोटे को कहा। वह बोला – मैं तो थक गया हूं बहुत। मुझसे चला नहीं जाता। दूसरों को क्यों नहीं कहते ? इनकी टांगों में पानी तो नहीं पड़ा।

पिता ने दूसरों से कहा, परन्तु कोई नहीं गया। तंग आकर उसकी पत्नि ने कहा – अच्छा, कोई नहीं जाता तो मैं ही जाती हूं।

पति ने कहा – अरे, तू कहां जायेगी। बैठी रह। कहीं हाथ पांव तोड़कर आ जायेगी।

कोई भी नहीं गया। लकड़ियां नहीं, पानी नहीं, चूल्हा नहीं, कुछ भी नहीं आया वहां। वृक्ष पर बैठा वही पक्षी इस तमाशे को देखता रहा। वह बोला – अरे, तुम विचित्र लोग हो ! लकड़ी नहीं, पानी नहीं, खाने को समान नही तब क्या भूखे रहोगे ? खाओगे क्या ?

एक लड़के ने तुरन्त कहा – तुझे खाएंगें।

पक्षी ने हंसते हुए कहा – आराम से बैठे रहो। मुझे खाने वाले चले गए। तुम आपस में ही फूटे बैठे हो। तुमसे कुछ नहीं होगा। यह कहा और उड़के चला गया वह कहीं दूर किसी वृक्ष पर।

यह है एकता और फूट का परिणाम। जो लोग मिलकर नहीं रहते, उन्हें असफलता के अतिरिक्त कुछ नहीं मिलता।

आहार निद्रा भय मैथुनञ्च सामान्यमेतत् पशुभिर्नराणाम।
धर्मो हि तेषामधिको विशेषो धर्मेणहीनाः पशुभिर्समानाः।।

मनुष्य और पशु में खाना–पीना, काम, निंद्रा, भय यह तो समान रूप से पाए जाते हैं, इन दोनों में अन्तर यही है कि धर्म मनुष्यता का लक्षण है, धर्म के बिना यह मनुष्य भी पशुवत है।

अनुव्रतः पितुःपुत्रो मात्रा भवतु संमनाः।
जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शान्तिवान् अथर्व : 3/30/2

पुत्र, पिता का अनुव्रती हो, मां के मन को अच्छा लगने वाला हो, उसके अनुकूल हो, पति के लिए स्त्री मधुर भा ाणी हो, (विवाह में मधुपर्क) ान्तिदायी हो। भाई का भाई से बहन का बहन से अपार प्रेम हो त्याग व स्नेह की भावना से दोनों एक हो यह प्रयास हमारा होना चाहिए (राम–भरत) तभी हमारे पारिवारिक धर्म का पालन होगा।

यज्ञ

– आचार्य ज्ञानेश्वार्य, रोजड

प्रश्न 313 : गोमेध, अश्वमेध आदि का क्या अर्थ है, क्या इन यज्ञों में गाय की या घोड़े की बलि दी जाती है ?

उत्तर : गोमेध का अर्थ है – शरीर इन्द्रियों आदि को बलवान पुष्ट बनाना तथा अश्वमेध का अर्थ है – राष्ट्र को समृद्ध, सुसंस्कृत, सुखी, सम्पन्न बनाने के लिए उत्तम कार्यों को करना। इन यज्ञों में गाय की या घोड़े की बलि नहीं दी जाती है।

प्रश्न 314 : क्या स्त्री व शूद्र भी यज्ञ कर सकते हैं ?

उत्तर : हॉ, स्त्री व शूद्र भी यज्ञ कर सकते हैं।

प्रश्न 315 : यज्ञ में कहीं, कभी, किसी स्थिति में पाप, हिंसा होती है ?

उत्तर : नहीं, शास्त्रोक्त विधि अनुसार करने से यज्ञ में कहीं भी, कभी भी, किसी भी स्थिति में पाप, हिंसा नहीं होती है।

प्रश्न 316 : यज्ञ कर्म सकाम कर्म की कोटि में आता है या नि काम कर्म की कोटि में ?

उत्तर : यज्ञ कर्म दोनों प्रकार से होते हैं सकाम भी और निष्काम भी।

प्रश्न 317 : क्या यज्ञ के माध्यम से मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण, हराने जिताने, आदि की क्रियाएं भी की जा सकती हैं ?

उत्तर : नहीं, यज्ञ में मारण मोहन आदि क्रियाएं नहीं होती हैं ये दुष्ट व्यक्तियों की चालाकी, धूर्तता होती है।

प्रश्न 318 : क्या माचिस (दिया सलाई) के बिना केवल मन्त्रों को बोलकर भी अग्नि को जलाया जा सकता है।

उत्तर : मात्र मन्त्रों को बोलकर अग्नि नहीं जलाई जा सकती है।

प्रश्न 319 : क्या यज्ञ करने वाले व्यक्ति को यज्ञोपवीत धारण करना अनिवार्य है? इसके बिना यज्ञ नहीं होता ?

उत्तर : ऋषियों ने अनुशासन बनाये रखने हेतु एक व्यवस्था बनाई है कि यज्ञोपवीत धारण करके यज्ञ करना चाहिये किन्तु यज्ञोपवीत धारण न करके यज्ञ करने से पाप नहीं होता है।

प्रश्न 320 : वेद के मन्त्रों की ही तरह क्या गीता, रामायण, महाभारत के श्लोकों को बोलकर भी यज्ञ किया जा सकता है ?

उत्तर : नहीं, गीता आदि ग्रंथों के श्लोकों को बोलकर यज्ञ नहीं करना चाहिये क्योंकि गीता आदि के श्लोकों के वो अर्थ नहीं निकलते हैं जो वेद मन्त्रों के अर्थ निकलते हैं।

प्रश्न 321 : धृत पात्र में यदि घी बच जावे और सामग्री के पात्र में सामग्री बच जावे तो उसका क्या करना चाहिये ? उसे यज्ञ कुण्ड में डालें या न डालें ?

उत्तर : यदि अग्नि घी–सामग्री को जला सकती है तो डाल सकते हैं। नहीं तो पुनः पृथक घृत सामग्री पात्र में अगले दिन के लिए रख देना चाहिए।

प्रश्न 322 : क्या यज्ञ कर्म को यंत्रीकरण द्वारा स्वचलित बनाकर भी सम्पन्न किया जा सकता है ?

उत्तर : हॉ किया जा सकता है किन्तु स्वयं करने से जो लाभ होते हैं वे नहीं मिल पायेगें।

प्रश्न 323 : क्या मन्त्रों का अशुद्ध उच्चारण करने वाले यज्ञकर्ता को पाप लगता है या लाभ नहीं होता है या कोई हानि होती है ?

उत्तर : मन्त्र अशुद्ध बोलकर यज्ञ करने से भी भौतिक लाभ तो होता है। किन्तु मन्त्र अशुद्ध सीखकर गलत परम्परा चला देते हैं।

प्रश्न 324 : जो व्यक्ति बिना ही आहुति दिये, बिना ही मन्त्रों को बोले यज्ञ शाला में बैठे होते हैं उनको भी यज्ञ का लाभ होता है ?

उत्तर : हॉ, होता है। उन्हें भी भेषज वायु मिलती है। मन्त्रों से प्रेरणा मिलती है। मन्त्र याद भी होते हैं।

प्रश्न 325 : यज्ञ करते समय मन को कहॉ पर केन्द्रित करना चाहिये मन्त्र के अर्थ पर, अग्नि पर, ध्वनि पर या अन्य स्थान पर ?

उत्तर : उत्तम तो यह है कि मन को मन्त्र के अर्थों में लगाना चाहिए या ईश्वर में लगाना चाहिए या फिर अग्नि की लपटों में लगाना चाहिए।

प्रश्न 326 : क्या किसी पण्डित, ब्राह्मण को धन देकर अपने लाभ के लिए यज्ञ कराया जा सकता है ?

उत्तर : हॉ, मन देकर यज्ञ कराया जा सकता है। जितने धन से घृत–सामग्री आदि का यज्ञ होगा उसका तो पुण्य मिलेगा किन्तु करने का पुण्य लाभ कर्ता (पण्डित, ब्राह्मण) को मिलेगा।

प्रश्न 327 : यज्ञ एक समय करना चाहिए या दो समय ?

उत्तर : सामर्थ्य, साधन, समय, श्रद्धा, रूचि हो तो दो समय (प्रातः व सायं) करना चाहिए।

प्रश्न 328 : पंच महायज्ञ किसे कहते हैं ?

उत्तर : प्रत्येक गृहस्थी के लिए अनिवार्य रूप से करने योग्य पॉच कार्यों को पंचमहायज्ञ कहते हैं। जैसे – ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, बलिवैश्यदेवयज्ञ, अतिथियज्ञ।

क्रमशः.....

शपथ

एक समारोह में देश सुरक्षा व गोपनीयता की,
जैसे ही मन्त्री ने शपथ खाई
प्रबुद्ध श्रोताओं के बीच से, आवाज ये आई।
बस–बस रहने दो, शपथ को बदनाम न करो,
अपनी करनी से, कुछ तो डरो।

पहलीबार भी इसी तरह शपथ खाई थी,
जनता को अपनी ईमानदारी दिखाई थी।
पर शपथ, मंच तक ही सीमित रह गई,
सारी बातें हवा में ही बह गई।

अब तो शपथ भी डरने लगी है तुम जैसों से,
जिनका ईमान, धरम, रिश्ता सबकुछ है पैसों से।

अब शपथ के भरम में और हमें मूर्ख न बनाओ,
चरित्र में उतार करके ही विश्वास दिलाओ।

शपथ के बाद, गिरे चरित्र की देखी पराकाष्ठा,
इसीलिए शपथ पर नहीं रही कोई आस्था।

शपथ में विश्वास छिपा है,
पर तुममें तो विष का वास दिखा है।
लूट लिया तुमने, ऐसे ही नाटक कर देश को,
रावण बने हो धर राम के भेष को।

बर्बादी कर दी बाग की, बनकर माली।
इतना बदनाम हो गए, कि नाम लगता है तुम्हारा गाली।।

सारे अवगुण, दुराचार और भ्रष्टाचार,
ये सब शपथ के बाद से ही पनपाते हो।
लूट रहे देश, पर रक्षक कहलाते हो,

इसलिए जब–जब कोई नेता शपथ खाता है,
उसके इस पाखण्ड से दिल घबराता है।

क्योंकि गिरावट की शुरूआत, ऐसे ही समारोह से होती है।
ताली बजाती जो जनता, फिर बाद में रोती है।

– प्रकाश आर्य, महू

बोधकथा –

क्षमा

स्वामी दयानन्द जब विद्या समाप्त कर चुके तो गुरू दक्षिणा में लौंग लेकर स्वामी विरजानन्द के पास उपस्थित हुए।

गुरूजी बोले – मैं तुमसे लोगों से बढ़कर गुरू दक्षिणा की आशा करता हूँ।

स्वामी दयानन्द ने हाथ जोड़ दिए – आज्ञा कीजिए, गुरूदेव।

गुरूजी–तुम संसार से झूठ और पाखण्ड का नाश करके सत्य और वेद का प्रचार करो।

स्वामी दयानन्द ने यही गुरू दक्षिणा चुकाते हुए अपना सारा जीवन बलिदान कर दिया। उन्होंने कई मत मतान्तर वालों से शास्त्रार्थ करके असत्य को हराया। साधारण जनों को आदेश देकर सत्य का प्रचार किया और अपने जीवन के अन्तिम दिनों में वे राजा–महाराजाओं को सुधारकर भारत की राजनीति को एक स्वस्थ मोड देने में लग गये। इसी उद्देश्य से वे जोधपुर नरेश के पास भी आए। स्वामीजी की विद्वत्ता और ब्रह्मचर्य से प्रभावित होकर जोधपुर नरेश उनके शिष्य और भक्त बन गये।

एक दिन स्वामी जी ने देखा कि नरेश के पास एक वेश्या बैठी है। स्वामीजी ने नरेश को तुरन्त फटकार दिया – अरे सिंहों का कुतिया के साथ क्या संबंध है ?

बस, इस वाक्य ने नरेश की सोई हुई आत्मा को जगा दिया। उसने उसी क्षण वेश्याओं को तिलांजलि दे दी। नरेश का जीवन तो सुधर गया किन्तु वेश्या ने अपना गाया जाल उखड़ता देखकर स्वामीजी से भरपूर बदला लेने का निश्चय किया।

वह स्वामी जी के रसोईये के पास पहुंची और उसके सामने रूपयों की ढ़ेरी लगा दी। रसोईयें की ऑखें चमकने लगी और उसने अपनी प्रसन्नता की बाढ़ को रोकते हुए पूछा – इतने रूपए किस लिये ?

यह तुम्हारा पुरस्कार है, वेश्या ने कहा – बोलो, स्वीकार है तुम्हें ?

भला रूपए देखकर किसका दिल नहीं पिघलता ? रसोईये के मुंह से भी निकला, स्वीकार क्यों नहीं, पर मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ ? बस, एक छोटा सा काम। कहते–कहते वेश्या ने बारीक पिसे हुए कॉच की एक पुड़िया रसोईये के हाथ में दे दी और कहा – यह कॉच कल अपने स्वामी के भोजन में मिलाकर उसे खिला देना।

यह सुनकर एक बार तो रसोईया कॉप गया, किन्तु वेश्या ने उसे और धन देकर कहा – तुम्हें रूपये कम लगते हैं तो लो, और लो, काम हो जाने पर अलग पुरस्कार दूँगीं।

रूपयों का जादू काम कर गया। रसोईये ने उसी दिन स्वामीजी को भोजन में कॉच का तीखा विष खिला दिया। स्वामीजी को पहले भी दो बार विष दिया जा चुका था। किन्तु वे योगी थे, उन्होंने दोनों बार अपनी यौगिक क्रियाओं द्वारा अपनी ऑत को धो लिया था। किन्तु कॉच का विष नस–नस में धस गया, वह जहॉ पहुंचा नाड़ियॉ फूल गई या फट गई। स्वामीजी के सारे शरीर में विषैले फोड़ों और फफोले निकल आए, जिनसे रह–रहकर रक्त रिसाता था, किन्तु क्या मजाल मुंह से एकबार भी हाय निकली हो, इसके बदले ओम और ईश्वर से दो शब्द उनकी वाणी पर थे।

उधर स्वामीजी मृत्युशैया पर पड़े थे, इधर रसोईया पकड लिया गया और लोग उसे स्वामीजी के पास हथकड़ियों में ले आए। स्वामीजी ने लोगो को कहा – इसकी हथकड़ियॉ खोलकर इसे मेरे पास छोड़ जाओं। आदेश का पालन हुआ। सब चले गए तो स्वामीजी ने अपने रसोईये से कहा– जगन्नाथ तुम्हें रूपयों की आवश्यकता है न, ये लो रूपये। यह कहकर स्वामीजी ने रूपयों की एक थैली उसकी ओर बढ़ा दी।

अब तक जगन्नाथ अपने आप को संभाले हुए था, किन्तु स्वामीजी का यह व्यवहार देखकर अपने होंश स्थिर नहीं रख सका। उसका धीरज टूट गया और फूट–फूट कर रोते हुए वह यह कहने लगा – महाराज, मैंने बड़ा पाप किया है, जो एक दुष्टा की बातों में आकर आप जैसे पवित्र सन्त को घातक विष खिला दिया है। क्षमा कीजिए स्वामीजी।

"मैं तुम्हें हृदय से क्षमा करता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि आज तुम्हारे मन में जो मानवता जागृत हुई हैं वह तुम्हें उन्नति की ओर ले जाए। स्वामीजी ने कहा।

जगन्नाथ रो पड़ा, स्वामीजी मैं इन रूपयों को लेकर क्या करूंगा ? मुझे तो दण्ड दीजिये।

स्वामीजी ने कहा – जगन्नाथ, अब रोने का समय नहीं है, तनिक भी देर मत करो और यहॉ से भागकर अपने प्राणों की रक्षा करो। ये रूपये मार्ग में तुम्हारे काम आएंगें। इस प्रकार एक योगीराज ने अपने हत्यारे को भी क्षमा कर दिया, ऐसा सन्त भला और कौन होगा ?

स्वामीजी की क्षमा का जगन्नाथ पर अद्भुत प्रभाव पड़ा। उसके हृदय का पाप इस प्रकार धुलकर साफ हो गया जिस प्रकार गंगा के जल में स्नान करने से शरीर का मैल दूर हो जाता है। उसने अपना शेष जीवन पाप का प्रायश्चित करने और जप, तप करने में व्यतीत कर दिया। ऐसे दया के सागर दयानन्द ने अपने हत्यारे को भी क्षमा कर दिया।

कभी जीवन की बेलेन्स शीट भी बनाओं !

सभी व्यापारी, कम्पनियां और उद्योग धंधों में लगे व्यक्ति अपने व्यापार की सही जानकारी रखने के लिए बैलेन्स शीट बनाते हैं। इस बेलेन्स शीट से वर्ष भर किए गये कार्यों का परिणाम सामने आता है, व्यापार से संबंधित वर्ष में सारी बातें, कितना व्यय किया, किस–किस मद में किया, कितनी आय हुई, कितना लाभ हुआ और कितना बकाया है, यदि किसी का कर्जा चुकाना है तो कितना हैं, कुल लाभ या हानि कितनी आदि–आदि।

व्यापार का उद्देष्य लाभ कमाना है उस लाभ में निरंतर वृद्धि होती रहे यह भी लक्ष्य होता है। इस लाभ को और कैसे बढ़ाया जावे किन खर्चो को कम किया जा सकता है यह भी बेलेन्स शीट के अनुसार निर्धारित किया जाता है।

यदि व्यापार में घाटा हो रहा है तो भी वह समझ में आ जाता है कि इसके क्या कारण है, यदि अकारण व्यय बढ़ा है, व्यवस्था में कमी है, या फिजुल खर्ची बढ़ी है तो इससे समझ कर फिर व्यवस्थित प्रबन्धन कर सुधार किया जाता है और व्यापार को होने वाली हानि से बचा लिया जाता है।

यह बैलेंस शीट व्यापार का अर्थिक हिसाब किताब है जो व्यापार व कार्य क्षमता का सही मूल्यांकन करती है। इसके द्वारा स्थिति से परिचित हो जाते हैं कि सही दिषा में प्रयत्न है या कुछ गड़बड़ है। ऐसा होना भी चाहिए अन्यथा कुछ पता ही नहीं चल पावेगा कि व्यापार से हमें लाभ हो रहा है या हानि।

यह प्रयास आर्थिक जानकारी के लिए किया जाता है। इसमें बड़ी सतर्कता, प्रयत्न, कुषलता लगती है, जिस धन के लिए यह सब किया जाता है वह बहुत कुछ तो है सबकुछ नहीं है। यह अपने आप में भी कुछ नहीं हैं इसका महत्व तो इसका उपयोग करने वाले पर निर्भर है। मान लीजिए देष में करंसी छपती जावें किन्तु उसका उपयोग करने वाला कोई न हो तो करंसी का क्या महत्व रह जावेगा ? कागज के टुकड़ों से अधिक कुछ नहीं। इसलिए धन सम्पत्ती साधन हैं और साधन तब ही अस्तित्व में रहते है जब उनका कोई उपयोग करता रहे ।

समझिए 100 व्यक्ति किसी पार्टी में बैठे है उनमे से कोई भी किसी प्रकार का नषा नहीं करता है किन्तु उसी पार्टी में बेष कीमती शराब की बोतलें रखी हैं। यद्यपि शराब बड़ी महंगी है किन्तु इनकी कीमत उन 100 व्यक्तियों के सामने कुछ भी नहीं है, उनके लिए व्यर्थ की वस्तु है।

इसलिए केवल धन अपने आप में कुछ नहीं है। परन्तु आज व्यक्ति उसकी सुरक्षा ओर वृद्धी अपने से अधिक करने में लगा है। अपना स्वास्थ सम्मान, नैतिकता सब दांव पर लगाकर उसे आवष्यकता से बहुत अधिक होने पर भी और अधिक प्राप्त करने की होड़ में लगा है। यह धन नष्वर है एक समय के पष्चात इसका हम स्वयं उपयोग भी नहीं कर सकेगें। यदि उपयोग नहीं किया तो इसे यहीं दूसरों के लिए छोड़ जावेगें। फिर पता नहीं उस छोड़े हुए धन का कौन कैसा उपयोग करेगा।

धन की तीन स्थिति बतायी है दान, उपयोग या विनाष पूर्व की दो स्थिति से प्रायः समाज दूर है और इस कारण अंतिम स्थिति नाष (जो दान के या उपयोग के काम न आयी) उसकी ही प्रायः स्थिति देखी जा रही है। जो कुछ धन रात दिन मेहनत से अनेक प्रमाणों से कमाया है धन का भी पूरा उपयोग नहीं कर पाते, न कर सकते हैं। कहने का तात्पर्य यह कि इस धन का लाभ स्थायी नहीं, इसका पूरा उपयोग हमारे लिए नहीं और अधिक से अधिक कुछ हिस्से का उपयोग हम अपने लिए इस जीवन तक ही वह भी स्वस्थ रहने तक कर सकते है।

इस पर कभी हमने विचार नहीं किया कि नष्वरवान भौतिक साधनों की प्राप्ती के लिए पूरी शक्ति लगाते है पूरी सतर्कता रखते है उसे और अच्छे से अच्छा करना चाहते है। **किन्तु बहुमूल्य जीवन मूल्यों की कभी बेलेन्स शीट बनाने का प्रयास नहीं करते है**। इस मनुष्य जीवन के आय व्यय ऋण और फिजूल खर्ची पर कभी विचार ही नहीं किया। इस सर्वश्रेष्ठ योनी को पाकर हमने इसमें क्या पाया, क्या खोया, कितना हम पर ऋण है या पतन की ओर इससे हमें लाभ मिल रहा है या हानि ? कुछ पता नहीं। इसी ओर संकेत करते हुए एक श्लोक बड़ा महत्वपूर्ण है –

प्रत्यहं प्रत्यवेक्षेत नरः चरितात्मनः।
किन्नु पशुभिस्तुल्य किन्नु सत्पुरषैरीति।।

याद रखो इस पृथ्वी पर जन्म लेने वाला हर मानव ऋण लेकर जन्मता है। हम अनेक ऋणों से दबे है बहुत ऋण है हम पर, हमारे नानें बहुत कुछ लिखा है। फिर यह सोचना है कि इन ऋणों को चुकाने में हम जमा क्या कर रहे है ? उन ऋणों को चुका भी रहे है या नहीं ? इसकी बैलेंरा शीट बनाना भी जरूरी है। हमें इन ऋणों को चुकाना होता है। सामान्य व्यवहारिक जीवन में कोई व्यक्ति कर्जा तो ले लेवे पर चुकाए नहीं तो उसे अच्छा नहीं माना जाता। समाज की निगाह से गिर जाता है। सम्मानजनक व्यवहार तो यही है कि हम पर जो किसी का कर्ज है उसे चुका दिया जावे।

हम पर माता–पिता, ऋषियों का, देवताओं का, इस समाज का, इस राष्ट्र का ऋण है। इन्हें चुकाना हमारी नैतिक जवाबदारी है, इन सबके हम पर बड़े उपकार हैं उनको न चुकाना कृतघ्नता कहलाती है, एहसान फरोषी कहलाती है।

इस ऋण को इनके एहसानों को हम कर्म के माध्यम से उतारने का प्रयास कर सकते हैं। जन्म से मृत्यु पर्यन्त उस सर्वषक्तिमान परमात्म देव की हर क्षण निरन्तर हम पर कृपा बरस रही है। जो ज्ञान सफल जीवन संबंधी राह हमें ऋषियों ने, विद्वानों ने बताई उसका आगे प्रसार करना उसे और अधिक फैलाना उनके ऋणों को उतारने का माध्यम है।

जिस समाज में हम रहते हैं, उस समाज ने हमें बहुत कुछ दिया है, सभ्यता, सुरक्षा, संबंध, जीवनोपयोगी साधन, संस्कार, संबल बहुत कुछ उससे हमें मिला है उस समाज के लिए कुछ अच्छा सोचना अपने कर्तव्यों का निर्वाह करना समाज का कर्ज उतारना है।

पारीवारिक ऋण हम पर है उस माँ का जिसने अनेक कष्टों को सहते हुए भी हमें जन्म देने के लिए उसके महान दुःखों को प्रसन्नता से सहा। पहली गुरू बनकर बोलना व सामान्य, व्यवहारिक, शारीरिक ज्ञान दिया, रिष्तों की पहचान करवाई। पिता ने अपनी पूरी क्षमता और योग्यता से पालन किया, संवरक्षण दिया। योग्य बनाने के लिए हर संभव प्रयत्न किया। हमारी उन्नति को अपनी उन्नति से अधिक महत्व दिया। तमाम उन पितरों का जिनसे स्नेह, मार्गदर्षन और सम्मान जनक पहचान हमें मिली। वह आचार्य जिसने समाज में रहने योग्य आजीविका चलाने के लिए योग्य बनाया। इन सबका हम पर ऋण हैं। क्या इनके लिए हम भी उतनी ही निष्ठा, कर्तव्य भाव व श्रद्धापूर्वक अपने कर्तव्यों का पालन कर रहे हैं। यदि नहीं तो हमारे जीवन की बैलेन्स शीट हमें ऋणि ही बताते रहेगी, जमा की साईड खाली रहेगी, जो जीवन में घाटे की बात है। अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए ही हमारा यह लोक व परलोक सुधर सकता है। इसके लिए हमारे जीवन में किए गए कर्मों की बैलेन्स शीट घाटे की नहीं लाभ दिखाने वाली हो। यही जीवन का सदुपयोग है।

जल ही जीवन है, इसे व्यर्थ न बहाएं।

महात्मा आनन्द स्वामी

– डॉ. भवानीलाल भारतीय

आर्य समाज के लिए तन–मन से समर्पित, प्रभावी, लेखक, पत्रकार तथा तपस्वी साधक महाशय खुशहालचन्द 'खुर्सन्द' ही, सन्यास ग्रहण के बाद महात्मा आनन्द स्वामी के नाम से विख्यात हुए। आनन्द स्वामी का जन्म पश्चिमी पंजाब के जिला गुजरात के जलालपुर जट्टा में, गणेशदास सूरी नामक एक सद्गृहस्थ के यहां 1883 में हुआ। यही वर्ष ऋषि दयानन्द के निर्वाण का था। इसी वर्ष बालक खुशहालचन्द ने जन्म लेकर, ऋषि दयानन्द के आदर्शों को पूरा करने में अपना सारत जीवन लगा दिया।

खुशहालचन्द के पिता गणेशदारा सूरी को एक बार स्वामी दयानन्द से भेंट करने का सुअवसर मिला था। वे स्वयं भी आर्य समाज की विचारधारा में दीक्षित हो चुके थे, अतः बालक खुशहालचन्द को भी ऋषि के सिद्धान्तों से परिचित होने में विलम्ब नहीं हुआ।

बाल्यकाल से ही खुशहालचन्द की गायत्री मन्त्र में अनन्य निष्ठा थी। वे इस महामन्त्र का नित्य नियमपूर्वक पाठ करते थे। कालान्तर में जब लाहौर आए तो उन्हें, आर्य समाज के लिए कार्य करने का बृहत्तर क्षेत्र मिला। महात्मा हंसराज की प्रेरणा से ही वे लाहौर आए थे, अतः महात्मा जी से मिलकर जब उन्होंने आर्य समाज का कार्य करने की इच्छा व्यक्त की, तो उन्हें आर्य प्रादेशिक सभा के उर्दू मुखपत्र 'आर्य गजट' का सम्पादकीय कार्य करने के लिए कहा गया। उनका वेतन तीस रूपये मासिक नियत कर दिया गया। थोड़े समय बाद वे सभा के लेखपाल भी बनाए गए, किन्तु रूपयों पैसों का हिसाब रखना उन्हें आता ही नहीं था। फलतः वे आर्य गजट के सहकारी सम्पादक के रूप में ही कार्य करते रहे। यहां उन्होंने यंगमैन आर्य समाज की स्थापना की, युवकों को दयानन्द के मिशन की पूर्ति के लिए संगठित किया।

उन दिनों लाहौर, भारत की राजनैतिक तथा राष्ट्रीय गतिविधियों का केन्द्र बना हुआ था। खुशहालचन्द वैदिक धर्म के प्रति आस्थावान् होने के साथ–साथ मातृभूमि के भी प्रखर भक्त थे। उनके बड़े पुत्र रणबीर का, शहीद भगतसिंह से सम्पर्क हो गया। दोनों परस्पर मैत्री–संबंध में बंधकर, देश को आजाद कराने की प्रवृत्तियों में संलग्न हो गए। उनका समस्त परिवार ही देशभक्ति के रंग में रंगा हुआ था।

महाशय खुशहालचन्द आर्य समाज की सभी गतिविधियों में पूरी निष्ठा तथा लगन के साथ भाग लेते थे। 1923 में वैशाखी के पर्व पर, उन्होंने उर्दू में मिलाप नामक एक दैनिक पत्र निकालना आरम्भ किया, क्योंकि पंजाब की सार्वजनिक भाषा उन दिनों उर्दू ही थी। इसके प्रकाशन की प्रेरणा उन्हें महात्मा हंसराज ने ही दी थी। शीघ्र ही इस पत्र में उर्दू भाषियों में अत्यन्त लोकप्रियता प्राप्त कर ली। देश के स्वतन्त्र हो जाने के बाद तो यह दिल्ली, जालन्धर, हैदराबाद तथा लन्दन से प्रकाशित होने लगा था।

1930 में महाशयजी ने हिन्दी मिलाप का प्रकाशन भी आरम्भ कर दिया। यद्यपि उन दिनों पंजाब से हिन्दी का पत्र निकालना जोखिम का काम था, इसमें आर्थिक हानि भी उठानी पड़ती थी, तथापि हिन्दी–हित को प्रधानता देने के उद्देश्य से खुशहालचन्द जी ने, घाटा उठाकर भी हिन्दी मिलाप को जारी रखा।

महाशयजी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की संगठनात्मक प्रवृत्तियों में भाग लेते ही थे, सभा के तत्वावधान में समय–समय पर चलाए जाने वाले समाज सेवा के कार्यों में भी उनका पूरा सहयोग रहता था। 1921 में जब केरल प्रान्त में मोप्ला मुसलमानों ने हिन्दुओं पर निर्मम अत्याचार किये, तो प्रादेशिक सभा के प्रधान महात्मा हंसराज ने, उन्हें कुछ अन्य साथियों के साथ मलाबार में सहायता हेतु भेजा। आपने निस्सहाय हिन्दुओं के पुनर्वास तथा सुरक्षा का पूर्ण प्रबंध किया। इसी प्रकार कोहाट (सीमान्त प्रान्त) के साम्प्रदायिक उपद्रवों के समय भी आपने सहायता कार्यों का संचालन किया। क्वेटा (बिलोचिस्तान) तथा बिहार में जब 1934–35 में भीषण भूकम्प आया, तो महाशय खुशहालचन्द ने सभा की ओर से सहायता–कार्यों की देखरेख की। हैदराबाद के आर्य सत्याग्रह में उन्हें तीसरे सर्वाधिकारी के रूप में वहां जाकर सत्याग्रह करने की आज्ञा मिली। फलतः आप 20 फरवरी 1939 को लाहौर से चलकर, 25 फरवरी को शोलापुर पहुंचे। 22 मार्च को सत्याग्रह किया और कारागार की यातनाएं सहीं। 1947 में आपको सिंध की राजधानी कराची में सत्यार्थ प्रकाश के 14 वें समुल्लास पर लगाए गए प्रतिबन्ध के विरोध में, महात्मा नारायण स्वामी तथा अन्य आर्य नेताओं के साथ सत्याग्रह हेतु जाना पड़ा।

देश–विभाजन के बाद, आर्य प्रोदेशिक सभा का कार्यालय जालन्धर आ गया। अब तक खुशहालचन्द जी ने योग साधन के द्वारा, अपनी आध्यात्मिक वृत्तियों का पर्याप्त परिष्कार कर लिया था। अतः उनमें तीव्र वैराग्य का भाव जागृत हुआ। 1949 में उन्होंने स्वामी आत्मानन्द सरस्वती से सन्यास ग्रहण किया। तबसे उनका नाम महात्मा आनन्द स्वामी रहा।

सन्यास ग्रहण कर लेने के बाद महात्मा जी ने पर्याप्त समय उत्तराखण्ड के वन पर्वतों तथा उपत्यकाओं में, प्रभु–भक्ति तथा योग–साधना में व्यतीत किया। समय–समय पर वे देश–विदेश में जाकर धर्मोपदेश भी करते रहे। भारत में लगभग सभी स्थानों पर भ्रमण करने के अतिरिक्त वे ईंग्लैण्ड, अमेरिका, कनाड़ा, अफ्रीका, मॉरिशस आदि देशों में भी धर्म–प्रचारार्थ जाते रहे। परोपकारिणी सभा ने उन्हें 1955 में अपना सभासद चुना। वे 1971 से 1977 तक इस सभा के प्रधान रहे। उन्होंने आर्य प्रादेशिक सभा की अध्यक्षता भी कई वर्षों तक की। आनन्द स्वामी के बहुत से प्रवचनों को पुस्तक रूप में प्रकाशित किया गया है। ये प्रवचन पाठकों में अत्यन्त लोकप्रियता प्राप्त कर चुके हैं। 'प्रभु भक्ति' 'प्रभु दर्शन' 'तत्व ज्ञान', 'महामन्त्र' आदि उनके प्रसिद्ध ग्रंथ हैं। इस महान तपस्वी साधक का निधन 24 अक्टूबर 1977 को नई दिल्ली में हुआ।

सिंहस्थ में अभूतपूर्व वेद प्रचार

प्रति 12 वर्षों में उज्जैन नगरी में सिंहस्थ का पूरे 1 माह का आयोजन होता रहा है। उसी श्रृंखला में दिनांक 22 अप्रेल से 21 मई 2016 तक 1 माह का आयोजन सम्पन्न हुआ।

एक स्थान पर इतनी बडी संख्या में सनातन धर्मियों की उपस्थिति संभवतः किसी अन्य अवसर व स्थान पर संभव नहीं है। करोड़ों की संख्या में देश–विदेश के कोने–कोने से स्त्री–पुरूष यहां पहुंचे थे। किसी भी विचारधारा का प्रसार–प्रचार करने के लिए इससे बड़ा अवसर प्राप्त नहीं हो सकता। इसी भावना से ही महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पहला ऐतिहासिक कार्य पाखण्ड खण्डिनी पताका हरिद्वार के कुंभ में फहराई थी।

इस अवसर पर उज्जैन सिंहस्थ में आर्य समाज के द्वारा अपनी प्रचार प्रसार योजना के तहत शिविर लगाया जाता रहा है उसी अनुसार पुनः आर्य समाज की ओर से 2 प्लाटों पर यह प्रचार शिविर लगाया गया। इस बार के शिविर की प्रारंभिक योजना में ही यह निश्चित किया गया था कि इस प्रयास का वास्तविक लाभ हमारे संगठन को मिलना चाहिए। इस लक्ष्य को सामने रखते हुए सार्थक व रचनात्मक दृष्टिकोण से जन सामान्य की दृष्टि से कार्यक्रम की रूपरेखा बनाई गई। ऐसे विद्वानों को आमन्त्रित किया जिनका गहन वैदिक चिन्तन व प्रभावी उद्‌बोधन हो। अच्छे मधुर गायक, प्रभावी भजनोपदेशकों को आमन्त्रित किया गया। यज्ञ ब्रह्मा के रूप में 4 गुरूकुलों की आचार्या भिन्न–भिन्न समय के लिए आमन्त्रित की गई थी। आकर्षक यज्ञ वेदी, विशाल मंच, सुन्दर पाण्डाल, आकर्षक प्रदर्शनी (गैलरी), बहुत व्यवस्थित व स्वादिष्ट भोजन व्यवस्था, अनेक सम्मेलन, विचार टी वी द्वारा सिनेमा हॉल व खुला प्रदर्शन, अतिथियों के लिए रहवास व्यवस्था, यह सबकुछ जो भी हुआ वह अभूतपूर्व था। इस सन्दर्भ में सबकुछ तो लिखना यहां संभव नहीं है परन्तु कुछ महत्वपूर्ण अंशों पर प्रकाश डाला जा रहा है।

सबसे पहले तो इस सफल आयोजन के लिए कुछ नामों का उल्लेख करना अत्यन्त आवश्यक है। इन कुछ महानुभावों ने लगभग 3 माह तक अपने व्यक्तिगत पारिवारिक कार्यों को त्याग कर पूर्ण समर्पण भावना से इस कार्य में जुट गए। आर्य समाज उज्जैन का पूर्व से ही पूर्ण और सबसे अधिक सहयोग इस आयोजन के लिए होता रहा है। स्थानीय समाज होने से इसकी उपयोगिता और जवाबदारी दोनों ही अधिक होती है। पिछले आयोजनों के अनुभवी श्री ओमप्रकाशजी अग्रवाल, श्री राजेन्द्रजी व्यास, श्री ललित नागर, आर्य समाज उज्जैन के प्रधान व उनके साथ समस्त सदस्यगणों का इस आयोजन के प्रति सराहनीय मार्गदर्शन व सहयोग रहा।

कार्यक्रम को व्यवस्थित करने के लिए कुछ व्यक्तियों पर विशेष भार सौंपा गया। इस हेतु मुझे (लक्ष्मीनारायण आर्य–उपप्रधान उज्जैन संभाग) को कार्यक्रम संयोजक, श्री गोविन्दराम आर्य (उपप्रधान इन्दौर संभाग) को कार्यक्रम अध्यक्ष श्री ललित नागर (उज्जैन) को मन्त्री, श्री वेदप्रकाश आर्य (भू सम्पत्ति अधिष्ठाता) को कोषाध्यक्ष मनोनीत किया गया।

उपरोक्त सभी महानुभावों ने यथाशक्ति पूर्ण प्रयास उन्हें कार्य की सौंपी गई, जवाबदारी मिलते ही प्रारंभ कर दिया। सभा के वाहन से पूरी प्रान्तीय सभाओं के मुख्य कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों से भेंट की, अनेक समाजों में गए, प्रत्येक संभाग का दौरा इस भावना से किया। वास्तव में यह बहुत बड़ा और सक्रियता का कार्य था जिसके परिणाम स्वरूप पूरे प्रान्त के आर्यजन इस कार्य से जुड़े, सहयोगी बनकर उपस्थित हुए, निश्चित ही वे सभी महानुभाव साधुवाद के पात्र हैं। इसीका परिणाम था कि आर्थिक सहयोग भी प्रचुर मात्रा में प्राप्त हुआ।

प्रान्तीय सभा का तो सहयोग रहा ही, साथ ही सार्वदेशिक सभा का भी इस बार विशेष सहयोग रहा। सभामन्त्री श्री प्रकाशजी आर्य का मार्गदर्शन और सहयोग कार्यक्रम की रूपरेखा, विद्वानों का चयन, अन्य व्यवस्था में बड़ा महत्वपूर्ण था। यह सौभाग्य है कि वे सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री भी हैं इसलिए प्रथम बार प्रदेश से बाहर राष्ट्रीय स्तर के विद्वान व अतिथि पधारे तथा बड़ा आर्थिक सहयोग भी इस हेतु प्राप्त हुआ। सफलता में उनकी सूझबूझ का बड़ा महत्व रहा। सार्वदेशिक सभा के द्वारा पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया था इस कारण देश के अन्य प्रान्तों से भी उपस्थिति रही और आर्थिक सहयोग भी पहलीबार सार्वदेशिक सभा के माध्यम से प्राप्त हुआ।

कार्य के संबंध में – उद्घाटन

30 दिवसीय इस प्रचार कार्य का प्रारंभ 21 अप्रेल से किया गया। 21 अप्रेल को महाशय धर्मपालजी (एम डी एच) के द्वारा ओ३म् ध्वजारोहण किया गया। 51 फुट ऊंचा ओ३म् ध्वज पूरे क्षेत्र में सबसे ऊंचा और आकर्षक था। कार्यक्रम का शुभारंभ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य, अहमदाबाद द्वारा दीप प्रज्वलित करके किया गया। इस अवसर पर प्रान्तीय सभा के प्रधान श्री इन्द्रप्रकाशजी गांधी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य, स्वामी ऋतस्पतिजी 'गुरूकुल होशंगाबाद', स्वामी सम्पूर्णानन्दजी, दिल्ली आदि आर्यजन पधारे थे।

अनेक पदाधिकारी, आर्य समाज के सदस्य और आर्य वीर दल के पदाधिकारी और बहुत बड़ी संख्या में आर्यवीर एकत्रित थे। पूरा पाण्डाल भरा हुआ था। अत्यन्त उत्साहजनक वातावरण बना हुआ था, यह अभूतपूर्व दृश्य था।

कहते हैं ना कि, जिसका प्रारंभ अच्छा हो, वह आधा सफल हो जाता है। इसी प्रकार यह प्रभावी प्रारंभ संगठन को एक चेतना व संगठित करने के लिए सिद्ध हुआ।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य, स्वामी सम्पूर्णानन्दजी एवं श्री महाशय धर्मपालजी एवं विनय आर्य द्वारा जन समूह को संबोधित किया तथा पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।

इसी समय महाशय धर्मपालजी ने 12 लाख रूपयों की तथा सभा प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य द्वारा 2 लाख रूपये 11 हजार रूपये की घोषणा की गई। अन्य अवसर पर दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य पधारे उनके कर कमलों से 10/– रूपये मात्र में सत्यार्थ प्रकाश वितरण करवाया। दो लाख रूपए का सहयोग श्री धर्मपालजी द्वारा प्रदान किया गया। इसी मध्य सार्वदेशिक सभा के निर्देश पर 2 लाख रूपया आर्य समाज आसनसोल से तथा महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा भी प्राप्त हुआ।

योग–प्राणायाम – प्रतिदिन प्रातः योग, प्राणायाम प्रशिक्षण किया जाता जिसमें आर्य समाज के अतिरिक्त अन्य यात्री भी सम्मिलित होते और शिविर का लाभ उठाते।

यज्ञ – प्रतिदिन दो समय यज्ञ होता रहा। 5 कुण्डीय यह हेतु आकर्षक यज्ञशाला का निर्माण किया गया था। यज्ञ वेदी आकर्षक व व्यवस्थित बनाई गई थी। ध्वनि प्रसारण व्यवस्था सुन्दर थी तथा पाण्डाल के बाहर दूर–दूर तक मन्त्र पाठ सुनाई देते थे।

यज्ञ ब्रह्मा के रूप में चार आचार्या आमन्त्रित थीं, सभी आचार्याओं के साथ मन्त्र पाठ करने हेतु गुरूकुल से कन्याएं भी साथ थी। प्रथम सत्र आचार्या **डॉ. अन्नपूर्णा** कन्या गुरूकुल देहरादून से, दूसरे सत्र में **आचार्या डॉ. प्रियवंदा जी** गुरूकुल नजीबाबाद से, तीसरे सत्र में **आचार्या नन्दिता जी** (चतुर्वेदा) पाणिनी गुरूकुल बनारस से, अन्तिम सत्र में **आचार्या प्रीति जी** पाणिनी महाविद्यालय बनारस से पधारी थीं।

यज्ञ में प्रतिदिन नए नए यजमान जिसमें प्रायः गैर आर्य समाजी अधिक होते, इससे अनेक व्यक्ति यज्ञ को समझ सके यज्ञ के प्रति उनकी आस्था बढ़ी।

एक और विशेषता यज्ञ के संबंध में थी, कुछ ग्रामों से 1 लाख रूपया एक दिन का भेंट किया गया और उस दिन उसी ग्राम के व्यक्ति यज्ञ पर बैठे। इससे बड़ा सहयोग मिला, यज्ञ के प्रति ग्राम वासियों में श्रद्धा बढ़ी।

यज्ञ का विशेष आकर्षण था वेद मन्त्र पाठ, गुरूकुल की कन्याओं द्वारा सस्वर वेद मन्त्र का उच्चारण राह चलते यात्रियों को आकर्षित करता रहा। रास्ते चलते राहगीर सड़क पर खड़े होकर सुनते रहते तथा बड़ी संख्या में पाण्डाल में आकर बैठ जाते।

इस प्रकार यज्ञ को बहुंत ध्यान से लोगों ने सुना और उसके संबंध में समझा भी। यज्ञ व्यवस्था में सभा के प्रचारक श्री सुरेश शास्त्री, राधेश्याम आर्य, धर्मेन्द्र शास्त्री पूरे समय यज्ञ की व्यवस्था में लगे रहे।

प्रवचन – यज्ञ के पश्चात 10 से 12 बजे तक मुख्य पाण्डाल से भजन और प्रवचन होते। प्रवचन हेतु आचार्य डॉ. वेदपालजी (मेरठ), स्वामी देवव्रतजी, स्वामी चेतानानन्दजी, स्वामी शान्तानन्दजी, आचार्य डॉ. शिवदत्तजी पाण्डे (सुल्तानपुर),

श्री वेदप्रकाश आर्य (आई जी) भोपाल, योगगुरू स्वामी रामदेवजी, डॉ. सत्यपालसिंह (सांसद), आचार्य भद्रकामजी वर्णी (दिल्ली), आचार्य प्रभामित्रजी, इन्दौर, श्री प्रकाशजी आर्य, डॉ. सोमदेवजी शास्त्री, आचार्य हरिशंकरजी अग्निहोत्री आगरा आदि अन्य थे। प्रत्येक दिन उपदेश प्रातःकालीन सत्र में आध्यात्मिक उपदेश जिसे हजारों की संख्या में श्रोता सुनते रहे। यह सत्र बड़ा प्रभावी और वेदिक विचारधारा से ओतप्रोत धर्म, कर्म ईश्वर पर होता रहा। इसे बहुत ही श्रद्धा से भक्तजन सुनते रहे। सभी विद्वानों का बहुत अच्छा प्रभाव रहा और वैदिक धर्म का एक व्यवस्थित प्रचार हुआ।

दोपहर का सत्र – दोप. 3 से 5 बजे तक प्रतिदिन अनेक विषयों पर सम्मेलन आयोजित किए गए थे, जिसमें मुख्य रूप से महिला सम्मेलन, युवा सम्मेलन, धर्म रक्षा, राष्ट्र रक्षा, राष्ट्रभाषा, वेद आदि थे। इसके अतिरिक्त ईश्वर और अन्ध विश्वास, कर्म व्यवस्था, वर्ण व्यवस्था, आदि विषयों पर व्याख्यान होते रहे, जिसमें बड़ी संख्या में श्रोता बड़े उत्साह और श्रद्धा के साथ जिज्ञासु भाव लेकर इस पाण्डाल में हो रही चर्चा को बड़े ध्यान से सुनते।

रात्रिकालीन सत्र – इसमें रात्रि. 8 से 10 तक भजन और व्याख्यान का आयोजन किया गया, जिसमें आमन्त्रित विद्वानों को, तथा भजनोपदेशकों द्वारा प्रस्तुति की गई। कई बार कार्यक्रम लगभग 11 बजे तक समाप्त हुए किन्तु श्रोता उठने का नाम नहीं लेते थे।

इस पाण्डाल की विशेषता यह थी कि जो भी श्रोता पाण्डाल में प्रवेश करता वह विद्वानों के प्रवचनों को सुनने के लिए देर तक बैठता, यह स्थिति कुछ पाण्डालों में ही थी अन्यथा केवल प्रदर्शनी और झाकियों के समान यात्री आते और जाते रहे। किन्तु आर्य समाज के इस पाण्डाल में किसी भी सत्र में आयोजित कार्यक्रम में श्रोता जमकर बैठते और प्रवचनों का, भजनों का पूरा लाभ लेते।

भजनोपदेशक – भजनों की प्रस्तुति भी अलग–अलग भजनोपदेशकों द्वारा होती रही जो आकर्षण का एक बड़ा कारण बनी। भजनोपदेशकों में श्री भूपेन्द्रसिंह जी, अलीगढ़, पं अमरसिंहजी, ब्यावर, काशीराम जी अनल, कानड़, सुश्री अंजलि आर्या, करनाल, श्री भानुप्रकाशजी, श्री नरेशदत्त जी आर्य, बिजनौर, रामनवासन पानीपथ, श्री हीरालालजी एवं शान्तिदेवी आर्य, विनोद आर्य, संजय आर्य आदि अन्य और भी थे, उनके द्वारा वैदिक सिद्धान्तों पर व आर्य समाज के इतिहास को लेकर अनेक भजनों की प्रस्तुति की। भजनों की प्रस्तुति के समय पर कई बार तो बैठक व्यवस्था भी कम पड़ जाती और श्रोता भावविभोर होकर सुनते। सभी भजनोपदेशकों को बहुत सराहा गया। लोगों ने बहुत ध्यान से सुना और प्रसन्न होकर उत्साहवर्धन के लिए हजारों रूपए की भेंट भी उन्हें प्रदान की।

कवि सम्मेलन – दिनांक 16/5/2016 को एक विशाल कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें राष्ट्रीय स्तर के कवियों ने काव्य पाठ किया, रात 2 बजे तक कवि सम्मेलन चलता रहा। सारस्वत मोहन मनीषी की कविता पाठ तो 16, 17 व 18 तीनों दिन रात्रि में हुई। कवि सम्मेलन में श्री राकेश दीक्षित, धोलपुर, श्री

प्रमोद राणावत, नीमच, सुश्री संध्या विश्व, नागदा, श्रीमती अनीता मुकाती, धार, श्री राहुल शर्मा, उज्जैन, डॉ. शिव चौरसिया, उज्जैन, डॉ. ओमपालसिंह 'निडर', सभामन्त्री श्री प्रकाश आर्य ने कवि सम्मेलन में आर्य समाज, राष्ट्र और सामाजिक व्यवस्था को लेकर रचनाएं पढ़ी गई। श्रृंगार रस पर एक भी कविता किसी भी कवि या कवियित्री ने नहीं की। इस कार्यक्रम के आयोजक श्री राजेन्द्र व्यास जो स्वयं एक कवि हैं, के नेतृत्व में हुआ। संचालन श्री सत्येन वर्मा 'सत्यन' इन्दौर ने किया।

विचार टी वी चैनल – चैनल की तरफ से एक फिल्म थियेटर बनाया गया था, जिसमें आर्य समाज के सिद्धान्तों, महापुरूषों के जीवन और उन घटनाओं को लेकर बनाई गयी फिल्मों का प्रदर्शन किया जा रहा था। इस थियेटर में रात देर तक कई शो किए जा रहे थे, जिन्हें आम जनता देखने हेतु आ रही थी। थियेटर में जो फिल्में बताई जा रहीं थी वह आर्य समाज व वैदिक सिद्धान्तों के लिए बहुत लाभकारी सिद्ध हो रही है। खुले पाण्डाल में भी रात को फिल्मों का प्रदर्शन किया गया, जिसे हजारों जनता ने देखा और सराहा। इतना ही नहीं, आर्य समाज के पाण्डाल के बाहर भी स्वामी श्रद्धानन्द पर बनीं, फिल्म आव्हान का सिंहस्थ मेले में निर्मित सबसे बड़े पाण्डाल स्वामी अवधेशानन्दजी का था, उसमें हजारों लोगों के मध्य चार बार किया गया और आगे भी और फिल्में बताने का आग्रह किया। किन्तु दुर्भाग्य से मौसम ने कहर ढ़ाया, तेज आंधी, तूफान के कारण सारी व्यवस्था गडबड़ा गई। तूफान इतना तेज था, कि अनेक पाण्डाल धराशायी हो गये। 6–7 व्यक्तियों की जान चली गई, सैकड़ों लोग घायल हो गये। पाण्डालों में पानी भर गया। इस कारण आगे का प्रदर्शन नहीं हो सके। हवा, पानी, आंधी की घटना से एक बार किसी तरह संभले थे तभी दूसरी बार वही स्थिति उत्पन्न हो गई और मौसम विभाग ने पूरे सिंहस्थ काल तक इसी प्रकार की तेज आंधी पानी की संभावना प्रसारित कर दी। इस कारण फिर विचार चैनल के माध्यम से फिल्म प्रदर्शन संभव नहीं हो सका। विचार टी वी की सीड़ियां आर्य समाज मल्हारगंज, इन्दौर में उपलब्ध हैं, कम मूल्य पर आप क्रय कर अपने परिवार को नैतिक शिक्षा सहज में दे सकते हैं।

साहित्य विक्रय – पाण्डाल में ही वैदिक साहित्य विक्रय की भव्य दुकानें लगी थीं, जिससे आगन्तुकों ने लाखों रूपये का साहित्य क्रय किया। पाण्डाल में ही चिकित्सा व्यवस्था भी थी, पूरे समय डॉक्टर और औषधियां उपलब्ध रहती थीं, कई लोगों का उपचार इसके माध्यम से हुआ।

विचार टी. वी. चैनल के धर्मेश आर्य द्वारा विचार टी. वी. के अतिरिक्त आर्य समाज के अन्य कार्यक्रमों में व्यवस्था में बहुत सराहनीय सहयोग रहा।

आर्य वीर दल का विशेषकर महाराष्ट्र, विदिशा, गरोठ के आर्यवीर दल का अत्यन्त प्रशंसनीय और सराहनीय सहयोग रहा।

निःशुल्क साहित्य विक्रय – पूरे माह आर्य समाज व वैदिक सिद्धान्तों पर आधारित हजारों की संख्या में निःशुल्क साहित्य वितरण किया गया।

कार्यक्रम स्थल पर अनेक महानुभावों ने अपना बहुत अधिक समय दिया और वे पूरे समय कार्यक्रम स्थल पर व्यवस्था में रहे, श्री गोविन्द आर्य तो 24 घण्टे कार्यक्रम स्थल पर ही रहे। अन्य सभी कार्यकारिणी के सदस्य व अनेक सदस्यगण प्रायः रोज ही कार्यक्रम में सहयोगी बनते रहे। महिला वर्ग का भी बहुत बड़ा सहयोग रहा। राऊ महिला समाज की टीम का विशेष सहयोग भोजन व यज्ञ व्यवस्था में रहा। भोजन व्यवस्था में श्री ओमप्रकाश आर्य, श्री अरूण आर्य, श्री कैलाश आर्य, श्री रमेश पाटीदार, सुवासा वाले ने पूरा कार्य अपने हाथ में ले रखा था और किसी प्रकार की कोई कमी नहीं हुई। यहां तक कि हवा, आंधी, बारिश में भी 400 व्यक्तियों का भोजन उपलब्ध करवाया। प्रतिदिन 3 से 4 हजार व्यक्तियों का भोजन निःशुल्क होता रहा। भोजन अत्यन्त स्वादिष्ट और हितकारी था। जो भी भोजन करने गया उसने भोजन की तारीफ की। रात्रि में रूकने की व्यवस्था भी पाण्डाल में अच्छी की गई थी, कभी कभी 5 से 7 सौ व्यक्ति पाण्डाल में रात्रि में ठहरते थे।

इस प्रकार पूरे एक माह का यह कार्यक्रम ईश्वर की कृपा से बिना किसी रूकावट के तथा वेद प्रचार की दृष्टि से सार्थक रहा। इसमें प्रान्त के सभी व्यक्तियों का बहुत बड़ा सहयोग रहा। सहयोगियों की सूची बहुत बडी है, जिनके नामों का उल्लेख करना संभव नहीं है। किन्तु यह निश्चित है ऐसी विचारधारा और कर्मठता से ही आर्य समाज के कार्य को गति मिल सकती है। जैसा कि कार्यक्रम के पहले निश्चय किया था कि इस कार्यक्रम के माध्यम से लाखों लोगों को आर्य समाज की जानकारी मिल जाये वह विचार सफल रहा।

कार्यक्रम में जो विद्वान और अतिथि पधारे उनमें से कुछ नाम इस प्रकार हैं–

स्वामी सर्वानन्द सरस्वती, स्वामी ऋतस्पतिजी, होशंगाबाद, सीकर, आचार्य नवानन्दर्जी, रोजड़, स्वामी चेतनानन्दजी (राज.), स्वामी देवव्रतजी सरस्वती, दिल्ली, श्री इन्द्रप्रकाशजी गांधी (सभाप्रधान), स्वामी शान्तानन्द जी, भवानीपुर, मा. सत्यापालसिंहजी, बागपत (उ.प्र.), डॉ. वेदपालजी, मेरठ, डॉ. शिवदत्तजी पाण्डेय, सुल्तानपुर, डॉ. सोमदेवजी शास्त्री, मुम्बई, साध्वी उत्तमायतिजी, अजमेर, श्री प्रकाशजी आर्य, महू, आ. हरिशंकरजी अग्निहोत्री, आगरा, आ. भद्रकामजी वर्णी, दिल्ली, आ. प्रभामित्रजी, इन्दौर, पं. नरेशदत्तजी आर्य, बिजनौर, पं. भूपेन्द्रसिंहजी आर्य, अलीगढ़, पं. अमरसिंहजी विद्यावाचस्पति, अजमेर, पं. भानुप्रकाशजी शास्त्री, बरेली, सुश्री अंजलि आर्या, करनाल।

अतिथिगण : योगगुरू स्वामी रामदेवजी, महाशय धर्मपालजी (एम.डी.एच.), श्री सुरेशचन्द्र आर्य (प्रधान–सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली), श्री धर्मपाल आर्य (प्रधान–दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा), श्री विनय आर्य (महामन्त्री – दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा), श्री दयाराम वरैया मंत्री (महाराष्ट्र), डॉ. सत्यपालसिंहजी (सांसद)

इस बार के कार्यक्रम में विशेष सहयोग और मार्गदर्शन सभामन्त्री श्री प्रकाश आर्य का रहा, जिनका उपयोग व्यवस्था में, संचालन में, धनराशि एकत्रित करने में, मंच से विभिन्न विषयों के व्याख्यान, कविता पाठ में भी रहा और यह हमारा सौभाग्य था कि श्री आर्य सार्वदेशिक सभा के भी महामन्त्री हैं, इस कारण इस सम्मेलन को प्रदेश के बाहर से भी सार्वदेशिक स्तर पर पहलीबार इतना हर दृष्टि से सहयोग प्राप्त हुआ। कार्यक्रम की प्रारंभिक योजना, विशेष करके महत्वपूर्ण विषयों का चयन आपके सानिध्य में किया गया था, उसी का परिणाम था कि श्रद्धालु बड़ी संख्या में उपस्थित होते रहे। मैं इस हेतु सभामन्त्री श्री प्रकाश आर्य का विशेष रूप से धन्यवाद ज्ञापित करता हूं।

इसी तारतम्य में श्री ओमप्रकाश अग्रवाल अस्वस्थ होते हुए भी वे कार्यक्रम स्थल पर पहुंचते और जब जाते उसी समय कोई प्रेरणास्पद सुझाव और सहयोग देते रहे। सिंहस्थ समाप्ति के पश्चात ही उनका स्वास्थ्य कुछ अधिक खराब हो गया था किन्तु जब उनसे मिलने पहुंचे तो वे बड़े प्रसन्न होकर सिंहस्थ की चर्चा करने लगे और कोषाध्यक्ष श्री वेदप्रकाश जी से पूछा कि सिंहस्थ में कोई घाटा तो नहीं है, हो तो बताओं। साथ ही प्रसन्नता के साथ कहा कि इस कुंभ में आर्य समाज का कार्य ऐतिहासिक कार्य हुआ है, इससे बड़ा सन्तोष मिला है।

योग द्वारा नशा मुक्ति अभियान समिति का गठन

मनुष्य जीवन के लिए स्वास्थ्य सर्वोपरि है, बिना स्वस्थ जीवन के यह जीवन अभिशाप है। इस भावना से ही महर्षि ने जीवन की उन्नति के लिए शारीरिक आत्मिक और फिर सामाजिक उन्नति का लिखा है। इसी भावना से मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक दिनांक 15/5/2016 को यह निर्णय लिया गया और योग द्वारा नशा मुक्ति अभियान समिति का गठन किया गया, ताकि समाज योग–आसन से शरीर को स्वस्थ करें और नशा मुक्ति से होने वाली हानियों से बच सके।

सर्वानुमति से इस निर्णय पर सभी उपस्थित सदस्यों ने हर्ष व्यक्त किया और श्री वेदप्रकाश जी शर्मा (आई जी भोपाल) से स्वीकृति प्राप्त कर उन्हें इसका अध्यक्ष मनोनीत किया। साथ ही समिति में श्री गोविन्दजी आर्य, डॉ. दक्षदेव गौड़ को सदस्य मनोनीत किया। आगे विस्तार और रूपरेखा अध्यक्ष और सदस्य मिलकर निश्चित करेगें।

आम जनता में ग्रामीण महिलाऐं भी यह चर्चा करते पायी गई कि यज्ञ शालाऐं तो बहुत बनी हैं, लेकिन आम जनता तो आर्य समाज द्वारा होने वाले यज्ञ में ही शामिल हो सकती है।

आर्य वीर दल का प्रान्तीय शिविर सम्पन्न

आर्य वीर दल का प्रान्तीय शिविर दिनांक 22 मई से 29 मई तक ग्राम आगर में आयोजित किया गया, इसमें लगभग 200 प्रशिक्षार्थियों ने प्रशिक्षण लिया। पूरे शिविर में सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रमुख संचालन स्वामी देवव्रतजी स्वयं उपस्थित रहे तथा प्रान्तीय संचालक श्री दिनेशचन्द्र वाजपेयी, कोषाध्यक्ष श्री राजकिशोरजी और उनके अतिरिक्त 8 व्यायाम शिक्षकों ने विद्यार्थियों को प्रशिक्षण दिया।

अन्तिम दिन क्षेत्र के विधायक और अन्य गणमान्य नागरिकों की उपस्थिति में पथ संचालन शहर के प्रमुख मार्गों से निकाला गया। जिसमें सभामन्त्री श्री प्रकाश जी आर्य, श्री लक्ष्मीनारायण आर्य, श्री गोविन्द आर्य, श्री दक्षदेव गौड़, श्री काशीराम अनल, श्री शिवसिंह आर्य, भगतसिंह आर्य, भैरवसिंह आर्य मन्त्री, रघुनाथ सिंह आर्य, करण सिंह आर्य आदि उपस्थित थे।

अन्त में आर्य वीरों ने बहुत सुन्दर प्रदर्शन किया तथा योग्यता के आधार पर उन्हें पारितोषिक भी प्रदान किए गए।

दरबारसिंह आर्य
उपमन्त्री उज्जैन संभाग

संस्कार शिविर सम्पन्न

आर्य समाज दयानन्दगंज, इन्दौर में 10 से 17 वर्ष तक की आयु तक के बालकों का दिनांक 12 जून से 19 जून तक संस्कार शिविर सम्पन्न हुआ, उसमें अवसतन बालकों की उपस्थिति 65 से 70 रही और बीच में 90 तक भी पहुंच गई। भाग लेने वाले बालको के लिए आर्य समाज की ओर से बहुत सुन्दर व्यवस्था की गई थी, उन्हें जल पान आदि लेखन सामग्री की व्यवस्था की गई थी। विद्यार्थियों को विद्यार्थी जीवन, मनुष्यता, ईश्वर, धर्म–कर्म, पारिवारिक सदाचार और जीवन उपयोगी महत्वपूर्ण विषयों पर संबोधित किया जाता रहा।

इनमें विभिन्न विषयों पर अच्छे वक्ता आमन्त्रित किए थे, जिन्होंने बच्चों को समझाकर सरल भाषा में ज्ञानवर्धक उपदेश दिए।

प्रसन्नता की बात है कि सारे बच्चे शिविर में आकर प्रसन्न थे और खुशी–खुशी जीवनोपयोगी उन बातों को ग्रहण कर रहे थे।

कार्यक्रम के संयोजक श्री दिनेश गुप्ता, सुश्री ज्योति आर्या और डॉ. अखिलेशचन्द्र शर्मा तथा संभागीय उपमन्त्री श्री दक्षदेव गौड का विशेष सहयोग रहा। बीच–बीच में सभामन्त्री श्री प्रकाशजी आर्य तथा इन्दौर संभाग के उपप्रधान श्री गोविन्द आर्य भी शिविर में उपस्थित हुए और बच्चों को उद्‌बोधन भी दिया। अन्त में शिविर के दौरान दी गई शिक्षा के आधार पर परीक्षा भी ली गई और उसमें उत्तीर्ण बालकों को पुरस्कृत किया गया।

ऐतिहासिक वेद प्रचार आयोजन सिंहस्थ सम्पन्न

पूर्व परम्परा अनुसार सिंहस्थ में आर्य समाज की ओर से प्रचारार्थ दो प्लाटों पर पाण्डाल निर्मित किए थे और 21 तारीख को ध्वजारोहण विश्व प्रसिद्ध व्यापार महाशय धर्मपाल जी के कर कमलों से एवं शुभारंभ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य के करकमलों से द्वीप प्रज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर स्वामी ऋतस्पति, स्वामी सम्पूर्णानन्दजी, श्री विनय आर्य, श्री इन्द्रप्रकाश गांधी, श्री दलवीरसिंह राघव, श्री भगवानदास अग्रवाल, श्री लक्ष्मीनारायण आर्य, श्री गोविन्द आर्य, श्री मानसिंह आर्य, श्री दक्षदेव गौड, ठाकुर जगन्नाथसिंह, दरबारसिंह, वेदप्रकाश आर्य, श्री राजेन्द्र व्यास आदि वरिष्ठ आर्यजन के अतिरिक्त विभिन्न आर्य समाजों तथा आर्य वीर दल की उपस्थिति में प्रारंभ हुआ।

कार्यक्रम में यज्ञ ब्रह्मा भजनोपदेशक तथा प्रवचनकर्ता के रूप में 50 से अधिक विद्वानों को आमन्त्रित किया गया था, विशाल कवि सम्मेलन और अनेक प्रकार की गोष्ठियों का आयोजन होता रहा। प्रचारार्थ 10 रू. में सत्यार्थ प्रकाश और हजारों रूपए का निःशुल्क साहित्य वितरण किया गया। पाण्डाल, यज्ञशाला अत्यन्त आकर्षक बनी थी, भोजन व्यवस्था अत्यन्त प्रशंसनीय और रूचिकर थी। कार्यक्रम में विशेष रूप से पधारे हुए महानुभावों ने स्वामी रामदेवजी, डॉ. सत्यपालसिंह जी, श्री धर्मपाल आर्य, महाराष्ट्र सभा के श्री दयाराम बसैया, गुजरात, राजस्थान आदि कई प्रान्तों से प्रमुख आर्यजन पधारे थे।

इस अवसर पर अनेक लोगों ने धूम्रपान, नशा, मांसाहार आदि का त्याग किया। आर्यजनों का एवं अन्य सामान्य व्यक्तियों का मानना था कि आर्य समाज के पाण्डाल में पहलीबार इतना अच्छा, भव्य और सार्थक कार्यक्रम हुआ है। जहां सुबह से शाम तक श्रोताओं की भीड़ लगी रहती थी। निश्चित ही इस बार के कार्यक्रम में लाखों लोगों को आर्य समाज और वैदिक धर्म से परिचित किया है। सभी का आर्यजनों का प्रयास ईश्वर की कृपा से सफल रहा है। कार्यक्रम की पूरी रूपरेखा पृथक से पत्रिका निकाली जा रही है, उसमें प्रकाशित किया जाएगा। इस सफल आयोजन के लिए समस्त आर्यजनों का हृदय से धन्यवाद करता हूं।

लक्ष्मीनारायण आर्य
उपप्रधान उज्जैन संभाग

शिविर में आने वाले अतिथियों का रजिस्ट्रेशन का कार्य, सत्यार्थ प्रकाश तथा विचार टी वी की सी डी का विक्रय कार्य श्री कासदे जी द्वारा किया गया।

प्रांतीय सभा से प्रचार हेतु पुस्तकें व स्टीकर प्राप्त करें

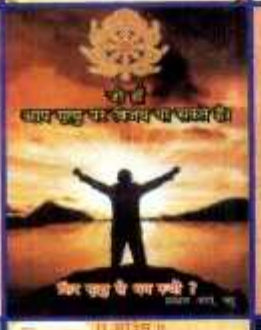

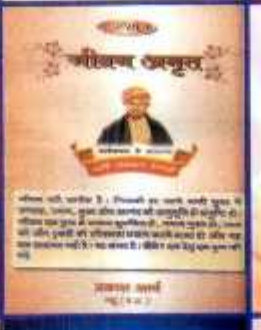

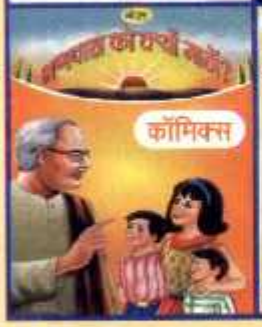

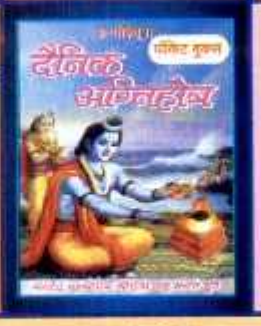

अगली प्रकाशित होने वाली अन्य पुस्तकें

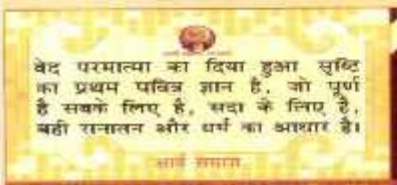

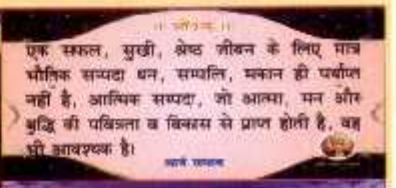

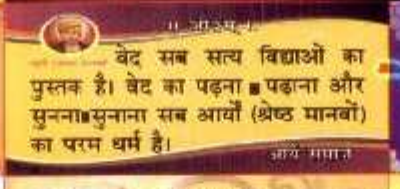

मानव कल्याणार्थ

आर्य समाज के दस नियम

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2015-17

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा

तात्या टोपे नगर, भोपाल-462003(म.प्र.)

मुद्रक, प्रकाशक, इन्द्र प्रकाश गांधी द्वारा कौशल प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित कराकर
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, तात्या टोपे नगर, भोपाल से प्रकाशित। संपादक - प्रकाश आर्य, महू

KMPS # 98262-71062